अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) किस शरीर में अस्थि मांस आदि होते हैं-

(क) औदारिक (ख) वैक्रिय

(ग) तैजस (घ) कार्मण ( )

(b) 18 पापों में पापों की जड़ है-

(क) मैथून (ख) मान

(ग) मिथ्यादर्शनशल्य (घ) माया मृषावाद ( )

(c) जिन जीवों के परिणाम अत्यन्त क्रूर एवं निर्दयी होते हैं, वह है -

(क) कृष्ण लेश्या (ख) कापोत लेश्या

(ग) नील लेश्या (घ) शुक्ल लेश्या ( )

(d) 'कपड़े व कैंची का दृष्टान्त' षट् द्रव्यों में किस द्रव्य का गुण है -

(क) धर्मास्तिकाय (ख) अधर्मास्तिकाय

(ग) आकाशास्तिकाय (घ) काल द्रव्य ( )

(e) विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को कहते हैं -

(क) भावना (ख) भूषण

(ग) शुद्धि (घ) यतना ( )

(f) 67 बोलों में आगारों की संख्या है-

(क) 5 (ख) 6

(ग) 3 (घ) 9 ( )

(g) जो तप पहले करना था वह किसी कारण से नहीं हो सका तो पीछे करे, वह कहलाता है-

(क) अणागयं (ख) सागारं

(ग) अइक्कंतं (घ) संकेयं ( )

(h) मनुष्य व तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अतिरिक्त शेष 22 दण्डक में अपच्चक्खाणी के भेद हैं-

(क) 3 (ख) 1

(ग) 2 (घ) 4 ( )

(i) समुच्चय जीव और 24 दण्डक जीवों में संज्ञाएं पायी जाती हैं-

(क) 4 (ख) 2

(ग) 10 (घ) 6 ( )

(j) विज्ञान का फल क्या है -

(क) ज्ञान (ख) दर्शन

(ग) पच्चक्खाण (घ) संयम ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) पदार्थ के यथार्थ स्वरूप का चिन्तन करना सत्य मनोयोग है। ( )

(b) क्षपक श्रेणि के जीव दसवें गुणस्थान से सीधे बारहवे गुणस्थान में होते हुए तेरहवें गुणस्थान में जाकर केवली बन जाते हैं। ( )

(c) पुद्गलास्तिकाय भाव से अरूपी अजीव है। ( )

(d) जीव कभी भी अजीव नहीं बन सकता तथा अजीव कभी भी जीव नहीं बन सकता। ( )

(e) गुणियों के मलिन वेश को देखकर घृणा नहीं करना विचिकित्सा है। ( )

(f) अद्धातप के 10 भेद होते हैं। ( )

(g) बिना उपयोग के धुन ही धुन में कार्य करने की प्रवृत्ति को लोक संज्ञा कहते हैं। ( )

(h) देवगति से आये हुए जीवों में लोभ व परिग्रह संज्ञा अधिक पायी जाती है। ( )

(i) संयम का फल पच्चक्खाण है। ( )

(j) वोदाण का फल क्रिया होता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	रस परित्याग	(क) देवलोक	.....
(b)	स्तनितकुमार	(ख) कापोत लेश्या	.....
(c)	अलसी के फूल के समान वर्ण	(ग) विगयादि का त्याग	.....
(d)	आणत	(घ) भवनपति	.....
(e)	पच्चक्खाण के भेद	(च) 10	.....
(f)	विनय के भेद	(छ) 2	.....
(g)	अनास्रव	(ज) वोदाण	.....
(h)	तप का फल	(झ) संयम का फल	.....
(i)	अत्यन्त मूर्च्छा	(य) माया संज्ञा	.....
(j)	छलकपट की चेष्टा	(र) परिग्रह संज्ञा	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) **मैं रक्त, मांस, मज्जा अस्थि आदि स्थूल पुद्गलों से बना हूँ।** .....

(b) **मैं उपशम श्रेणि -क्षपक श्रेणि को प्रारम्भ करने वाला गुणस्थान हूँ।** .....

(c) **मेरा विषय तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा-मीठा है।** .....

(d) **संसार में उदासीनता रूप वैराग्य भाव का होना मेरा लक्षण है।** .....

(e) **जीव,अजीव, त्रस स्थावर का ज्ञान न होने पर भी सर्वभूत, सर्वजीव, सर्वसत्व को हनने का त्याग है उसके पच्चक्खाण कहलाते हैं।** .....

(f) **जो एकान्त पण्डित ज्ञानी है उसके पच्चक्खाण कहलाते हैं।** .....

(g) **किसमें थोडे मूल गुण पच्चक्खाणी, उससे उत्तर गुण पच्चक्खाणी असंख्यात गुण उसमें अपच्चक्खाणी असंख्यात गुण है।** .....

(h) **पेट का खाली होना मेरे पैदा होने का कारण है।** .....

(i) **मैं अक्रिया का फल हूँ।** .....

(j) **मैं हेय उपादेय का विशेष ज्ञान कहलाता हूँ।** .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) **काय किसे कहते हैं? छः काया के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(b) **वैक्रिय शरीर के दो भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(c) **घ्राणेन्द्रिय के विषय व विकार लिखिए।**

.....

.....

.....

(d) **बाह्य तप के छः भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **देवादि सुगति की दायक तीन लेश्याओं के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **दूषण को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

(g) **67 बोल के आधार पर स्थानक को परिभाषित कीजिए एवं उसके कोई दो भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **यतना के कोई दो भेदों को परिभाषित कीजिए**

.....

.....

.....

(I) **सवणे नाणे में भगवान अक्रिया का क्या फल बताते हैं।**

.....

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **8x4 = (32)**

(a) **अधर्मास्तिकाय को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, गुण से स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **सकाम निर्जरा व अकाम निर्जरा को परिभाषित कर भाव स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **स्पर्शनेन्द्रिय के विषय व विकार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **श्रद्धान किसे कहते हैं? इसके 4 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **विनय के कोई चार भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **आगार किसे कहते हैं? राजाभियोग, गणाभियोग, बलाभियोग को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **सर्वउत्तर गुण पच्चक्खाण के दस भेदों में से प्रथम चार भेदों को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **आहार संज्ञा, भय संज्ञा के उत्पन्न होने के चार-चार कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....